अजीव तत्व

जैन दर्शन में अजीव तत्व अपने स्वरूप में जीव तत्व की अपेक्षा सर्वथा विपरीत होता है। जहाँ जीव तत्व सचेतन होता है, वहीं अजीव तत्व अचेतन होता है। अजीव सुख-दुःख की अनुभूति से शून्य होता है। इसी कारण इन्हें जड़ भी कहते हैं। इनमें स्वयं संचरण की शक्ति नहीं होती है। जब तक इनपर किसी बाह्य शक्ति का प्रयोग नहीं किया जाय, ये अजीव स्थिति-स्थापकत्व बनाये रखते हैं। धातु, पत्थर, काष्ठ-खण्ड आदि सभी प्राणहीन पदार्थ अजीव तत्व हैं। दृश्यमान जड़ पदार्थों के साथ-साथ धर्मास्तिकाय आदि अभौतिक पदार्थ भी अजीव ही हैं।

अजीव तत्व के भेद

अजीव तत्व के दो भेद होते हैं — मूर्त और अमूर्त। आगमों में इन्हीं भेदों को दो भिन्न नामों अरूपी एवं रूपी से भी परिचित कराया गया है। अमूर्त जीव के भी 4 भेद हैं — धर्म, अधर्म, आकाश, काल। मूर्त अजीव के अन्तर्गत केवल एक ही भेद आता है — पुद्गल। उक्त भेद व्यवस्था को हम निम्न प्रकार से समझ सकते हैं। —

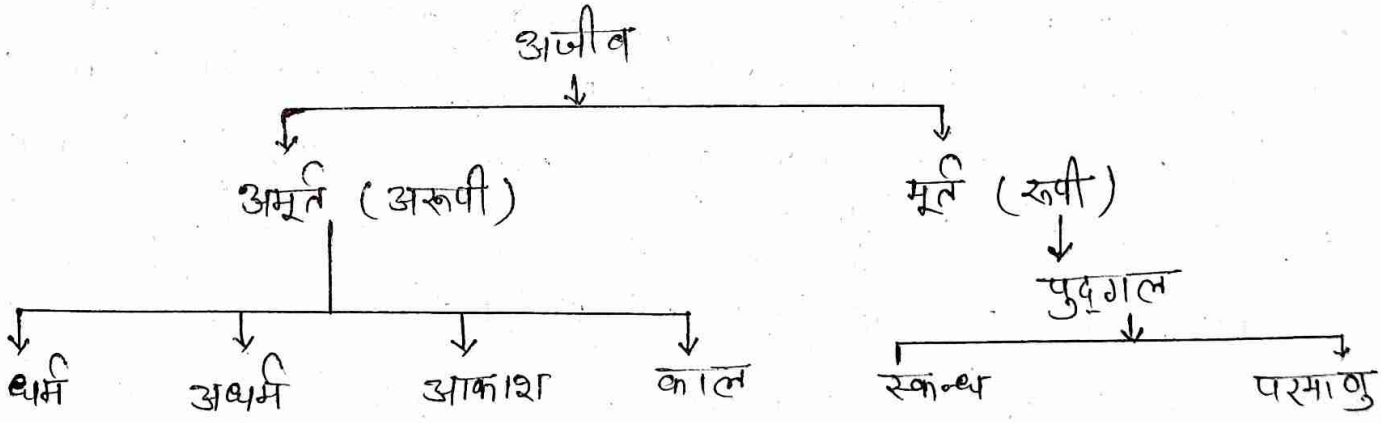

(1). **अमूर्त या अरूपी जीव →** कुछ अजीव ऐसे होते हैं जिन्हें हम रूप, रस, गंध, स्पर्शादि के द्वारा भी पहचान नहीं सकते, अनुभव नहीं कर सकते, वे अरूपी या अमूर्त अजीव कहलाते हैं।

अमूर्त या अरूपी अजीव चार (4) प्रकार के होते हैं —

धर्म, अधर्म, आकाश, काल।

धर्म द्रव्य → धर्म द्रव्य को गति सहायक तत्व कहा जाता है। ये स्वतंत्र द्रव्य है। एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में गमन (जाने) को क्रिया कहते हैं और इस क्रिया में जो सहायक होता है उसे धर्म द्रव्य कहते हैं। जैसे- मछली की गति में सहायक जल है, उसी प्रकार से जीव और पुद्गल द्रव्यों की गतिशीलता में धर्मद्रव्य सहायक होता है। धर्म द्रव्य रूप से रस, गंध, शब्द और स्पर्श से रहित है। यह संपूर्ण लोकाकाश में व्याप्त है और अखण्ड है।

अधर्म द्रव्य → अधर्म द्रव्य धर्म का विलोम है। यह जीव और पुद्गल को गतिहीनता या स्थिति में सहायक होता है। जैसे- थके हुए पथिक को छाया का आधार होता है उसी तरह जीव और पुद्गलों के ठहरने में अधर्म द्रव्य सहायक होता है। यह भी सम्पूर्ण लोकाकाश में व्याप्त है, अखण्ड है और रूप, रस आदि से रहित है।

आकाश द्रव्य → आकाश वह तत्व है जिसमें अन्य पदार्थों को आश्रय देने की क्षमता होती है। अन्य पदार्थ अपनी अवस्थिति के लिए आकाश का आश्रय (आधार) लेते हैं। यह एक है, सर्वव्यापक है, अखण्ड है और रूप-रसादि गुणों से रहित है। जैसे- वृक्ष की शाखा पर पक्षी बैठा है, तो पक्षी की स्थिति का आधार हुआ वृक्ष, वृक्ष का आधार पृथ्वी और इस पृथ्वी का भी आधार है आकाश। आकाश के आधार पर ही जगत के सभी पदार्थ टीके हुए हैं। इसके दो भेद हैं—

① लोकाकाश → इसमें जीव, पुद्गलादि तत्व टिके हुए हैं।

② अलोकाकाश → लोकाकाश के परे का भाग है।

काल द्रव्य → जो जीवादि द्रव्यों के परिणमन में सहायक हो वह काल या समय कहलाता है। अस्तित्व, अनादि और अनन्त रहने वाला काल ~~द्रव्यों के~~ परिणमनशील पदार्थों के परिणमन में सहायक मात्र होता है। जैसे- जिस प्रकार शीत ऋतु में ठंड से बचने के लिए अग्नि सहायक होती है और जिस प्रकार स्वयं घूमने की क्रिया करते हुए कुम्हार के चाक को नीचे की कीली सहायक होती

है, उसी प्रकार स्वयं परिणमन (घूमते) हुए पदार्थों की परिणमन-क्रिया में काल सहकारी है। काल के दो भेद हैं -

(1) परमार्थिक काल - यह नित्य और स्वाश्रित है। जैसे - दण्ड, दिन, मास, ...।

(2) व्यावहारिक काल - यह क्षणभंगुर और पराश्रित है। इसकी माप - पुद्गल द्रव्य के बिना नहीं हो सकती। इनका प्रारंभ और अंत होता है। जैसे - सेकेण्ड, मिनट, घण्टा, क्षण, मुहूर्त, प्रहर, वर्ष। इस प्रकार से परिवर्तन, गति, युवा-वृद्ध, नवीनता-प्राचीनता आदि व्यवहार काल के संभव नहीं है।

(2). मूर्त या रूपी जीव → कुछ अजीव ऐसे हैं, जो रूप, रस, गंध और स्पर्श से युक्त होते हैं। इनका निश्चित रूप-रंग, आकार-आकृति होती है। इनको नेत्रों द्वारा देखा जा सकता है और अन्य गुणों द्वारा पहचाना जा सकता है। ऐसे अजीव - रूपी या मूर्त कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत पुद्गल द्रव्य आता है।

पुद्गल → यह मूर्त या रूपी अजीव है। जिसमें रूप, रस, गंध और स्पर्श - ये चारों गुण पाये जाते हैं वह पुद्गल है। सभी दृश्यमान पदार्थ पुद्गलों द्वारा निर्मित हैं। पुद्गल द्रव्य के दो भेद हैं - (1) परमाणु और (2) संघात।

→ स्कंध या संघात → दो या दो से अधिक परमाणुओं के मेल को स्कंध कहते हैं।

→ परमाणु → जो पुद्गल का सबसे छोटा भाग है, जिसे हमारी इन्द्रियाँ ग्रहण नहीं कर सकती हैं और जो अविभागी है, वह परमाणु है। यह अविनाशी एवं शब्द रहित होता है। प्रत्येक परमाणु चार गुण वाला होता है। इनके विभिन्न प्रकार के संयोग से नाना-विध पदार्थ बन जाते हैं। अतः पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु - ये चारों तत्व विभिन्न प्रकार के परमाणुओं से निर्मित नहीं हैं, अपितु एक ही प्रकार के परमाणुओं के समूह से उत्पन्न हैं।

Note ⇒ काल एकमात्र अनास्तिकाय द्रव्य है। बाकी के चार धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल आस्तिकाय द्रव्य के अंतर्गत आते हैं।

⇒ यहाँ पर द्रव्य के अजीव तत्व का संपूर्ण विस्तारीकरण किया गया है।